स्वीकरण का लम्बा रास्ता

सीता कृष्णमूर्ति

इस दुनिया में लगभग हम सभी का पालन-पोषण इस तरह से किया जाता है कि हम आराम, धन और प्रतिष्ठा के साथ-साथ एक ऐसा पेशा या करियर चाहते हैं जो दूसरों के लिए भी अभीष्ट हो। जब हम इन चीज़ों के लिए योजनाएँ बनाते हैं तो माता-पिता, भाई-बहन यहाँ तक कि शिक्षक होने के नाते भी हम विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति के बारे में ज़रा भी नहीं सोचते। इसलिए जब कोई 'विकलांग' बच्चा पैदा होता है तो माता-पिता को यह बात स्वीकार करने में बहुत कठिनाई होती है क्योंकि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की बात तो उनके जीवन की योजनाओं में कभी थी ही नहीं। आँकड़े बताते हैं कि जन्म लेने वाले 59 जीवित बच्चों में से एक बच्चे को स्वलीनता स्पेक्ट्रम विकार (एएसडी) होता है। अन्य अक्षमताएँ जैसे कि बौद्धिक चुनौतियाँ, स्पास्टिसिटी, अधिगम विकलांगता (जैसा कि भारत में कहा जाता है), डाउन सिंड्रोम (डीएस) और अतिसक्रियता विकार की घटनाएँ तुलनात्मक रूप से कम हैं।

विकलांग बच्चों (सीडब्ल्यूडीएस) की ज़रूरतों से निपटने के लिए माता-पिता पर्याप्त रूप से तैयार नहीं होते। उन्हें अपने शुभचिन्तक मित्रों और रिश्तेदारों से ढेर सारी 'सलाह' मिलती है। जो लोग शिक्षित हैं वे गूगल का सहारा लेते हैं लेकिन अच्छी, सार्थक जानकारी और समर्थन प्रणाली का पूरी तरह से अभाव है।

बड़े शहरों में भी, उपलब्ध अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे की हालत को देखते हुए विकलांग बच्चों (सभी प्रकार के) को विशेष स्कूलों में दाख़िला दिलाया जाता है जो थेरेपी और प्रशिक्षण के लिए आवश्यक विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते हैं। मुख्यधारा के जो स्कूल समावेशन का पालन करते हैं, उन्हें भी बहुत कठिनाई होती है क्योंकि शिक्षकों को न तो पर्याप्त ज्ञान दिया जाता है और न ही यथेष्ट प्रशिक्षण। इन सबके अलावा विशेष स्कूलों और विकलांग बच्चों के माता-पिता के लिए सबसे बड़ी चिन्ता की बात यह है कि समाज में जागरूकता की कमी है।

मेरा विचार यह है कि समाज ने विकलांग बच्चों को अस्वीकार करके उनके लिए तय हमारे लक्ष्यों को अवरुद्ध कर दिया है। पिछले कुछ वर्षों में, हमें विकलांग बच्चों को न्यूरो-टिपिकल[1] आबादी की यथासम्भव बराबरी पर लाने के लिए अपने पाठ्यक्रम को नया रूप देना पड़ा है। ऐसी कौन-सी बात है जिसके कारण लोग विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों को तुच्छ समझते हैं, उनसे डरते हैं, उन्हें नापसन्द करते हैं यहाँ तक कि उन्हें अस्वीकृत करते हैं?

शैक्षिक योग्यता, विशेष कौशल और आर्थिक स्थिति उतनी मायने नहीं रखती है, जितनी विकलांग बच्चों के समाजीकरण और संवाद करने की क्षमता। दीपिका स्कूल में हम इन कौशलों को बेहतर बनाने और विकलांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास कर रहे हैं। जैसा कि कहा जाता है कि पहले घर में चिराग़ जलाओ, फिर मस्ज़िद में, तो इसके लिए सबसे पहले हमें अपने स्कूल के शिक्षकों को सशक्त बनाना है ताकि वे अपने स्वयं के व्यक्तित्व और क्षमता को विकसित और मज़बूत कर सकें। सभी विशेष शिक्षकों को शिक्षण और व्यवहार कौशल दोनों में सुविस्तृत प्रशिक्षण दिया जाए। सभी सहायक कर्मचारियों जैसे स्कूल का वाहन चलाने वालों तथा अन्य प्रशासनिक कर्मचारियों को इस बात के लिए प्रशिक्षित किया जाए कि वे बच्चों को प्यार करें और उन्हें स्वीकारें जिससे कि स्कूल को अपने लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थन मिले।

हमारी यात्रा

जब मैं मुख्यधारा के एक स्कूल में पढ़ाया करती थी तो मैं यह समझ नहीं पा रही थी कि ममता* कक्षा में पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु को कुछ सैकेण्ड से ज़्यादा समय तक याद रखने या समझने में असमर्थ थी। दिनेश* की मुस्कान फ़रिश्तों जैसी थी लेकिन वह न तो बात करता था और न ही किसी गतिविधि में भाग लेता था, हालाँकि वही गतिविधि अन्य बच्चों को बहुत रोमांचक लगती थी। मेरे मन में लगातार उठ रहे इस 'क्यों' ने मुझे एक नई दुनिया की खोज करने के लिए प्रेरित किया, जिसने मुझे असीम आनन्द और अपार सन्तुष्टि प्रदान की।

जब हमने विशेष बच्चों के साथ काम करना शुरू किया तो हमारे सामने केवल एक मुद्दा था - धीमी गति वाला अधिगम। बच्चे शान्ति से बैठ सकते थे, ध्यान दे सकते थे और उत्साह के साथ सीख सकते थे। उन्हें पढ़ाना बहुत आसान था। उनका सामाजिक और सम्प्रेषण कौशल बहुत बढ़िया था। उन्हें केवल अकादमिक शिक्षा को लेकर समस्या थी।

तो ज़ाहिर है कि हम इस बात के लिए ही तैयार नहीं थे कि एक साल में तीन विद्यार्थियों को लेने से हमें किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और हमने बारह विद्यार्थी ले लिए। अब, विद्यार्थियों को अतिसक्रियता विकार से लेकर एस्पर्गरस सिंड्रोम तक की विभिन्न समस्याएँ थीं! और यह उस समय की बात है जब एस्पर्गरस सिंड्रोम का नाम तक किसी ने नहीं सुना था। हम बिलकुल दिशाहीन थे, गूगल-हीन थे और स्वलीनता वाले बच्चों के साथ काम करने का कोई अनुभव हमें नहीं था।

अतिसक्रिय अरविन्द* को पढ़ने और लिखने से नफ़रत थी और वह जैसे ही अपनी डेस्क पर बैठता, वैसे ही डेस्क के नीचे अपने पैरों से ताल देने लगता और अपने हाथों से डेस्क बजाने लगता था। अन्य बच्चों के लिए यह एक संकेत था कि वे जो कुछ भी कर रहे हों, उसे छोड़कर उसका अनुकरण करें! उसके पीछे भाग-भागकर हमने अपने कई कीमती घण्टे बर्बाद कर दिए। विशाल*, स्वलीनता वाला बच्चा था और उसके पास शब्दों का जो एकमात्र भण्डार था, वह था टीवी चैनल के नामों की एक लम्बी सूची, जिसे वह लगातार दोहराता था। उस समय अपनी अज्ञानता के कारण हम यह नहीं जान पाए कि वह सम्प्रेषण करने की कोशिश कर रहा है। हम नहीं जान पाए कि स्नेहा* अपने कानों में उँगलियाँ डालकर इसलिए बैठती थी क्योंकि वह ध्वनि के प्रति अपनी अतिसंवेदनशीलता से जूझ रही थी। ज़ाहिर है कि हमारे पास सीखने को बहुत कुछ था। हमने विकलांगता के क्षेत्र में वरिष्ठ विशेष शिक्षकों, डॉक्टरों और यथासम्भव विशेषज्ञों से मुलाक़ात की। अपने ज्ञान को व्यापक करने के लिए हमने भारत भर के सेमिनारों और सम्मेलनों में भाग लिया। दुर्भाग्य से हमने केवल इसकी व्यापकता, क्या और क्यों के बारे में सीखा, पर कैसे के बारे में कुछ नहीं।

हमें सिर्फ़ अरविन्द, विशाल और स्नेहा ही नहीं, बल्कि मुख्यधारा के स्कूलों द्वारा नकारे गए कई बच्चों की मदद करनी थी। हम मुख्यधारा के स्कूलों को दोष नहीं दे रहे थे। उन्हें तो यह पता ही नहीं था कि क्या करना है, कैसे मदद करें की तो बात ही जाने दीजिए। लेकिन यह बात भी हम समझ गए क्योंकि हम ख़ुद भी तो उस वक़्त यह सब नहीं जानते थे!

हमने जो सबक़ सीखे

हमने विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं पर किताबें ख़रीदीं लेकिन उनमें से कोई भी भारतीय बच्चों पर लागू नहीं होती थी। तब हमने प्रेक्षण के महत्व को महसूस किया। बच्चों के निष्पक्ष और सूक्ष्म प्रेक्षण और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण ने हमें विकलांग बच्चों की दुनिया के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं, विशेष रूप से स्वलीन बच्चों के बारे में।

हमने महसूस किया कि शारीरिक गतिविधि और नियमित अभ्यास ने न केवल उनके गत्यात्मक विकास में मदद की, बल्कि उनकी कुछ संवेदी समस्याओं को दूर करने में भी मदद की। उन्हें स्व-सहायता कौशल और व्यक्तिगत स्वच्छता, जिन्हें अभी तक माता-पिता की ज़िम्मेदारी माना जाता था, के बारे में सिखाने और नज़र रखने की आवश्यकता होती है। बच्चों को अँग्रेज़ी समझना और बोलना सिखाना एक बड़ी चुनौती बन गया था, क्योंकि विद्यार्थी कई अलग-अलग राज्यों के थे और उन्हें अपनी मातृभाषा में भी कठिनाई होती थी। हमें ख़ुद उनकी भाषा या बोली नहीं आती थी, इसलिए उनकी बातें समझने के लिए हमें मूकाभिनय और सांकेतिक भाषा का सहारा लेना पड़ा। उन बच्चों में कौशिक* भी था, जिसे जब भी बोलना होता था, तब धाराप्रवाह रूप से बोलता; लेकिन शुक्र है कि हम कुछ समझ नहीं पाते थे क्योंकि हमें बाद में पता चला कि वह केवल अभ्रद शब्द बोलता था!

अगली चुनौती यह थी कि किसी बात को समझने, याद करने, उसका विश्लेषण करने, अनुप्रयोग करने और सामान्यीकरण करने में बच्चों की मदद कैसे की जाए। अधिगम प्रक्रिया के प्रत्येक कार्यों का विश्लेषण और अनुक्रमण करना था। सभी शैक्षिक अधिगम और व्यावसायिक प्रशिक्षण काफ़ी हद तक संज्ञानात्मक कौशलों पर निर्भर करते हैं। हमें अपने बच्चों के संज्ञान को बेहतर बनाने के लिए बहुत सारी योजनाएँ और गतिविधियाँ बनाने की आवश्यकता होती है। हमने पाया कि उचित प्रशिक्षण से बच्चों की समझ को कुछ हद तक बेहतर बनाया जा सकता है और उन्हें उपलब्धि का एहसास दिलाया जा सकता है।

लेकिन अगर हम उनके सामाजिक और सम्प्रेषण कौशल पर काम न कर पाएँ तो इनमें से कुछ भी करना सम्भव नहीं था, ख़ासकर तब जब विद्यार्थी किशोरावस्था में पहुँचते हैं क्योंकि तब व्यवहार में एक बड़ा बदलाव होता है और केवल संज्ञान काफ़ी नहीं होता। यदि विद्यार्थी नकारात्मक व्यवहार विकसित कर लें और उन्हें एक समूह में प्रशिक्षित न किया जा सके तो वर्षों के हमारे प्रयास बेकार हो जाएँगे। स्वीकरण हो इसके लिए हमें व्यवहार-कौशल पर ध्यान केन्द्रित करना था।

हमारी सफलता

जब हम बड़े परिसर में चले गए तो हमने धीरे-धीरे आवश्यक थेरेपी शुरू की। ग़ैर-मौखिक और बोलने में कठिनाइयों वाले बच्चों के लिए बोलने से सम्बन्धित थेरेपी। एक बहुत ही भले और दयालु बाल-चिकित्सा फिज़ियोथेरेपिस्ट ने एक यूनिट की स्थापना की और मोटर आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की मदद की। साथ ही जो विद्यार्थी प्रकाश, ध्वनि, स्पर्श, गन्ध और स्वाद के लिए अल्प या अतिसंवेदनशील थे, उनके लिए संवेदी एकीकरण थेरेपी की व्यवस्था की। माता-पिता

की सहायता और समर्थन के साथ आवश्यक साज-सामान से लैस एक भली-भाँति सुसज्जित व्यावसायिक थेरेपी यूनिट भी स्थापित की गई।

इन सब चीज़ों ने उनकी शारीरिक ज़रूरतों का ख्याल रखा। अब ज़रूरत इस बात की थी कि विद्यार्थी स्वीकरण और साझा करना, जीवन जीने की ख़ुशी, उपयुक्त और स्वीकार्य समाजीकरण, संस्कृति और आत्म-अभिव्यक्ति जैसी बहुत-सी अन्य बातें सीखें। संगीत, नृत्य, कला, शिल्प और खाना बनाना अधिगम का अभिन्न अंग बन गया। कला-आधारित थेरेपी को विशिष्ट उद्देश्यों के लिए एक उपचारात्मक प्रक्रिया के रूप में शुरू किया गया था।

कला-आधारित थेरेपी सत्र

बच्चों के साथ हमने आन्ध्र प्रदेश की बेलम गुफाओं की यात्रा की जो हमारी प्रमुख शिक्षण प्रक्रियाओं का एक आधार बनी। इस यात्रा ने कई शिक्षण तकनीकों के लिए विशाल सम्भावनाएँ खोल दीं। बच्चों ने ट्रेनों की खोज करना, टिकट बुक करना, यात्रा और आवास के लिए आवश्यक धन का हिसाब लगाना आदि सीखा। समाजीकरण और सम्प्रेषण स्वाभाविक रूप से हुआ। स्व-सहायता कौशल और व्यक्तिगत देखभाल का विकास हुआ। इससे उनका इतिहास, भूगोल और गणित का ज्ञान भी बढ़ा। हर साल विद्यार्थी भ्रमण करने गए— पहले तैयारी के रूप में छोटे भ्रमण पर, फिर दो सप्ताह या उससे अधिक समय के लम्बे भ्रमण पर।

बेशक, यह सब आसान नहीं रहा। कई बच्चे अभी भी बिस्तर गीला करते थे, उन्हें पता नहीं था कि स्नान कैसे करना है या उन्हें शौचालय का उपयोग करने के बुनियादी शिष्टाचारों की जानकारी नहीं थी। कुछ भोजन को लेकर असन्तुष्ट थे, उसमें मीन-मेख निकालते तो कुछ पूरी रात जागते रहते थे ...समस्याएँ असंख्य थीं। एक बार एक लम्बी यात्रा के दौरान पन्द्रह वर्षीय राजीव पूरी रात फूट-फूटकर रोया और कहने लगा कि वह अपनी माँ के पास वापस जाना चाहता है और वह भी तब जब हम सब उसकी माँ से 2000 किलोमीटर दूर थे!

उनमें से कुछ ने अप्रत्याशित रूप से अद्भुत कौशलों का प्रदर्शन किया। एस्पर्गरस सिंड्रोम (वर्तमान में जिसे एएसडी के तहत सूचीबद्ध किया गया है) वाला एक विद्यार्थी तेज़ गति से चल रही ट्रेन से भी हर स्टेशन और नदी के नाम पढ़ रहा था! कुछ लड़कों और लड़कियों ने बढ़िया नेतृत्व कौशल दिखाया और शिक्षकों के काम को काफ़ी हद तक हलका कर दिया। इन सभी यात्राओं और थेरेपी का एक और आश्चर्यजनक और आनन्ददायक परिणाम यह था कि विद्यार्थियों में सुदृढ़ जीवन मूल्य और सहिष्णुता के गुण विकसित हुए।

अब हममें अकादमिक क्षेत्र में प्रवेश करने का विश्वास पैदा हुआ और हमने अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस), दिल्ली द्वारा आयोजित कक्षा 3 और 5 की मुक्त बेसिक परीक्षाओं में लिखने के लिए प्रशिक्षित किया। विद्यार्थियों को स्थानीय एसएसएलसी बोर्ड परीक्षाओं और एनआईओएस की माध्यमिक स्तर की परीक्षाओं में लिखने के लिए भी प्रशिक्षित किया गया था। उपर्युक्त परीक्षा परिणामों की सफलता से पैदा हुए आत्मविश्वास के साथ हमने वरिष्ठ माध्यमिक परीक्षाओं की तैयारी के लिए शिक्षण में और उन लोगों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण में दक्षता हासिल की है जो शैक्षिक प्रशिक्षण जारी नहीं रख सकते हैं।

छोटे विद्यार्थियों का एक सामान्य दिन प्रार्थना व जप, ब्रेन-जिम व्यायाम एवं कक्षा में अधिगम के बीच-बीच में खेल, शारीरिक व्यायाम, कला और संगीत के साथ शुरू होता है। उनमें से कुछ स्पीच थेरेपी प्राप्त करते हैं और कुछ फिज़ियोथेरेपी। स्वलीनता स्पेक्ट्रम के अन्तर्गत आने वाले बच्चों को संवेदी एकीकरण भी दिया जाता है। किसी-किसी दिन संगीत, नृत्य और कला-आधारित थेरेपी दी जाती है। साप्ताहिक सैर की योजना बनाई जाती है ताकि बच्चे खेल सकें, चारों ओर के दृश्य देख सकें और लोगों के साथ घुल-मिल सकें।

12 से 18 वर्ष की आयु वाले बड़े विद्यार्थियों को उनकी सीखने की क्षमता के अनुसार अकादमिक प्रशिक्षण दिया जाता है। जिन लोगों को सीखने की गम्भीर कठिनाइयाँ होती हैं, उन्हें उचित और सार्थक व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। जिन विद्यार्थियों में दृश्य सम्बन्धी अच्छे बोधात्मक कौशल हैं, उन्हें मल्टीमीडिया और एनीमेशन, पाक कला,

ब्यूटीशियन और हेयरस्टाइलिंग, हाउसकीपिंग, लाण्ड्री, काग़ज़ के उत्पाद बनाने आदि में प्रशिक्षित किया जाता है।

विद्यार्थियों की क्षमताओं के आधार पर हर साल हम थीम-आधारित एक शो डिज़ाइन करते हैं। *टेस्ट्स ऑफ़ इण्डिया*, भारत की पाक कला पर आधारित एक कार्यक्रम था जिसे शानदार सफलता मिली। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने ख़ुद को भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बाँटा और ऐसे व्यंजन बनाए कि मुँह में पानी भर आए! *स्वच्छ भारत* पर एक कार्यक्रम किया गया जिसमें प्रदूषण के ख़तरों के बारे में और कचरे को अलग करने का महत्व बताया गया। स्वच्छ भारत पर आधारित संगीत और नृत्य के कार्यक्रम भी ख़ूबसूरती के साथ प्रस्तुत किए गए। न केवल विद्यार्थियों बल्कि शिक्षकों के कौशलों को प्रोत्साहित करने के लिए हमने *डान्सेस ऑफ़ इण्डिया* और *रिदम्स ऑफ़ इण्डिया* जैसे कार्यक्रम भी किए। ऐसे समय में हम माता-पिता के चेहरे पर गर्व और ख़ुशी की दुर्लभ चमक देखते हैं। जब बच्चे ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जो उन्हें पसन्द हैं, जिसे करने की योग्यता उनमें है तो बच्चों के चेहरों पर भी ख़ुशी साफ़ झलकती है; ये सारी चीज़ें मन को छू लेती हैं एवं बहुत आनन्ददायी होती हैं।

सुगमकर्ता

उन विद्यार्थियों के साथ रहना ख़ुशी की बात है जो हमेशा वर्तमान में रहते हैं। विशेष विद्यार्थियों की ज़रूरतों के बारे में इस समझ तक पहुँचने का यह रास्ता किसी भी लिहाज़ से सुगम नहीं था। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ और सीखने की अपनी एक अनूठी शैली होती है, भले ही उसमें किसी भी तरह की विकलांगता हो। उनके साथ आधिकारिक और दृढ़ रहकर कार्य करना अच्छा रहता है लेकिन कई शिक्षकों के लिए ऐसा कर पाना आसान नहीं होता है।

जब हम अतिसक्रिय बच्चों के साथ काम कर रहे हों तो हमें हर समय सतर्क और चौकस रहना होता है। जब हम बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चों के साथ काम करते हैं तो हमें उनकी समझ के स्तर के हिसाब से अधिगम पर विचार करना होता है। जब आप अपने सामने एक अच्छा प्राप्य लक्ष्य रखते हैं और उसे धीमी गति से हासिल करने की कोशिश करते हैं तो इन बच्चों के साथ करने के बहुत अद्भुत परिणाम सामने आते हैं। डिस्लेक्सिक बच्चे, जो अन्यथा सामान्य और बुद्धिमान होते हैं, सबसे अधिक कष्ट उठाते हैं क्योंकि कोई भी यह नहीं समझता है कि यह एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है। स्कूलों में कई जागरूकता अभियान के बावजूद, प्रभावित बच्चों को अभी भी स्कूलों और माता-पिता, दोनों के द्वारा दुर्व्यवहार और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। बस, यह कह दिया जाता है कि, 'जब उसे सभी उत्तर मालूम हैं तो वह पढ़ता क्यों नहीं या परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन क्यों नहीं करता?'

'यदि आप एएसडी वाले बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं तो आपको पहले उन्हें अपने दिलों में रखना होगा', यह आवश्यक सबक़ हमें स्वलीनता के साथ काम करने की शुरुआत में दिया गया था। उन्हें समझने और प्रशिक्षित करने के लिए अपार प्रेम, धैर्य और संवेदना की आवश्यकता होती है। यहाँ विशेष शिक्षक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनका व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, शब्दावली और ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। बेहद ज़रूरी है कि वे इसे एक नौकरी में रूप में नहीं लें, बल्कि एक प्रबल ज़रूरत के रूप में सोचें। शिक्षकों के रूप में हमें यह याद रखना होगा कि बच्चे हमारे रवैये को बहुत जल्दी समझ लेते हैं। शिक्षकों के लिए विशिष्ट विकलांगता में प्रशिक्षण अनिवार्य है लेकिन यह पूरे प्रशिक्षण कार्यक्रम का केवल एक बहुत छोटा हिस्सा है। कोई भी व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम में सफल हो सकता है और डिग्री प्राप्त कर सकता है, लेकिन इससे वह अच्छा शिक्षक नहीं बन सकता। इसके लिए एक सन्तुलित व्यक्तित्व, भावनात्मक स्थिरता, समस्या को सुलझाने के कौशल, रचनात्मक सोच के कौशल, प्रभावी सम्प्रेषण कौशल, समानुभूति और अच्छे पारस्परिक सम्बन्धों की आवश्यकता है। इन कौशलों को विकसित करने के लिए शिक्षकों की रचनात्मकता को उजागर करने के अवसरों के साथ-साथ एक समर्थनकारी और उत्साहजनक वातावरण की भी आवश्यकता होती है। स्कूल के प्रमुख और प्रबन्धक विद्यार्थी की प्रत्येक ज़रूरतों के बारे में पूरी तरह से अवगत नहीं हो सकते हैं, लेकिन शिक्षक यह भली-भाँति जानते हैं। इसलिए हम शिक्षकों को बाल विशिष्ट पाठ्यक्रम बनाने की ज़िम्मेदारी देने में विश्वास करते हैं। शिक्षक को एक व्यापक ढाँचा दिया जाता है, लेकिन दैनिक प्रशिक्षण के विवरण की तैयारी उन पर छोड़ दी जाती है।

उपर्युक्त सभी बातों से अधिक ज़रूरी यह है कि शिक्षकों को भी बच्चों की संवेदनशीलता के बारे में पता होना चाहिए। ऊँची-तेज़ आवाज़ या कभी-कभी तो चमकीली और भड़कीली पोशाक भी बच्चों के अशान्तिकारक व्यवहार का कारण बन सकती है। हमारे पास सभी सुगमकर्ताओं और थेरेपिस्टों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं जिनमें टीमवर्क के कौशल विकसित करने, नई शिक्षण तकनीकों को सीखने और विशेष शिक्षा के लिए लागू तकनीकी उपकरणों में प्रगति के बारे में मासिक सत्र आयोजित किए जाते हैं। तनाव से राहत देने वाले कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

सशक्तिकरण कार्यक्रम

यह ठीक है कि विकलांग बच्चों को पढ़ाने के लिए विशेष प्रकार की पद्धति एवं दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है लेकिन फिर भी यह बहुत ही सन्तोषजनक और तृप्ति देने वाला पेशा है। आध्यात्मिक विकास से सम्बन्धित नियमित सत्र भी अमूल्य साबित हुए हैं। शिक्षकों को तनाव से मुक्त करने के लिए हम उनके लिए पिकनिक और भ्रमण आयोजित करते हैं; उन्हें नृत्य और संगीत में प्रशिक्षित करते हैं; नियमित खेल-सत्र आयोजित करते हैं और ये सब केवल उन्हें विश्राम देने के लिए ही नहीं, बल्कि उनके आत्मसम्मान और स्वास्थ्य के संवर्धन के लिए भी आवश्यक हैं। प्रबन्धन समिति उन्हें केवल कर्मचारियों के रूप में नहीं, बल्कि स्रोत व्यक्तियों के रूप में देखती है जिन्हें नियमित रूप से मार्गदर्शन और समर्थन देने की आवश्यकता है— लेकिन उनका निरीक्षण नहीं किया जाता है —ताकि वे समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ विशेष बच्चों की देखभाल कर सकें।

माता-पिता

यदि कुओं के स्रोतों की देखभाल न की जाए और उन्हें समान रूप से पोषित न किया जाए तो वे सूख सकते हैं। विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के माता-पिता को भी अधिक देखभाल, अधिक संवेदना और निरन्तर समर्थन की आवश्यकता होती है। जब हम माता-पिता से बात करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि उनके जीवन का हर एक दिन कितनी कठिनाइयों से भरा होता है। कइयों के पास मदद का कोई साधन ही नहीं होता। कभी-कभी माता या पिता को अपने जीवनसाथी या क़रीबी रिश्तेदारों की सहायता भी नहीं मिलती। पैसों की समस्या भी होती है क्योंकि चिकित्सा और थेरेपी काफ़ी महँगी होती है और वे अतिरिक्त सत्रों का खर्चा उठाने की स्थिति में नहीं होते, भले ही वे बहुत आवश्यक हों। प्रबन्धन समिति और शिक्षकों, दोनों को उन्हें संवेदना और समानुभूति के साथ समझना होता है।

माता-पिता के लिए मेडिकल डॉक्टरों, परामर्शदाताओं और थेरेपिस्ट्स के साथ नियमित सत्र आयोजित किए जाते हैं।

हम बच्चों की मदद तभी कर सकते हैं जब उनके माता-पिता उनकी सहायता के लिए तैयार हों। बच्चे की प्रगति हो रही है या नहीं इस पर चर्चा करने के लिए अभिभावकों के साथ नियमित रूप से बैठकें की जाती हैं। वे हमारे पहले समर्थक हैं और उनका सहयोग अमूल्य है। हम प्रत्येक शैक्षिक वर्ष की शुरुआत बॉन्डिंग डे के साथ करते हैं, जहाँ हम माता-पिता, बच्चों, शिक्षकों और स्कूल के अन्य स्टाफ़ के साथ एक दिन की पिकनिक का आयोजन करते हैं। कभी-कभी, भाई-बहन और विस्तारित परिवार के सदस्य भी हमारे साथ आते हैं। पिकनिक जैसी एक अनौपचारिक स्थिति में जब माता-पिता और शिक्षक मिलते हैं तो उनके बीच एक गहरा सम्बन्ध विकसित होता है।

वास्तव में बच्चों के स्वीकरण और समावेशन का यह रास्ता बहुत लम्बा रहा है। आइए, हम यह प्रतिज्ञा करें कि हम समाज को बदल देंगे जिससे कि उसमें समावेशन होने लगे ताकि एक दिन ऐसा आए जब कोई भेदभाव न हो, कोई अस्वीकरण न हो— केवल प्रेम और संवेदना की भावना सर्वव्याप्त हो।

* पहचान की रक्षा के लिए बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं।

सीता कृष्णमूर्ति दीपिका स्कूल फॉर स्पेशल नीड्स चिल्ड्रन, दीपिका वोकेशनल सेंटर और समाश्रया लर्निंग सेंटर फॉर स्किल डेवलेपमेंट केन्द्र की संस्थापक प्राचार्या हैं। वे कला में स्नातकोत्तर, विशिष्ट अधिगम विकलांगता में डिप्लोमा, परामर्शन और मार्गदर्शन में डिप्लोमा और अंग्रेज़ी भाषा-शिक्षण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त कर चुकी हैं। उन्हें कुल 36 वर्ष का शिक्षण अनुभव है, जिसमें से 27 वर्ष उन्होंने विशेष बच्चों (विशेष रूप से डिस्लेक्सिया, बौद्धिक विकलांगता और स्वलीनता वाले बच्चों) के साथ अध्यापन कार्य किया। वे इन्फर्मेशन एण्ड रिसोर्स सेंटर फॉर डेवलेपमेंटल डिसएबिलिटीज़, बसवनगुडी, बेंगलूरु में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम निदेशक हैं। उनसे sita.krishnamurthy@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल